AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

l;qä ,o ,dkdh ifjokjk d ifr&iRuh d vkilh lcèkk ,o 'kf{kd Lrj dk rqyukRed vè;;u

ORIGINAL ARTICLE

Authors

eèkckyk ikBd]
शोधार्थी, गृहविज्ञान विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

एवं

M,- ¼Jherh½ vferk frokjh]
सह–प्राध्यापक,
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी)
महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

'kk/k lkj

çLrqr 'kkèk i= e l;qä ,o ,dkdh ifjokjk d ifr&iRuh d vkilh lcèkk ,o 'kf{kd Lrj dk rqyukRed vè;;u fd;k x;k gA 'kkèk leL;k e mÙkjçn'k d tuin tkuij d e¶rhxt Cykd vUrxr l;qä ,o ,dkdh ifjokjk d ifr&iRuh d vkilh lcèkk ,o 'kf{kd d vè;;u gr o;Ld efgyk ,o i:"k dk U;kn'k e lfEefyr fd;k x;k gA l;qä ¼181 ifjokj½ rFkk ,dkdh ¼119 ifjokj½ d 150&150 efgyk i#"k dk U;kn'k gr puk x;k gA rF;k dk lxg.k dju gr 'kkèkkFkÊ }kjk lkekftd&vkfFkd Lrj ekiuh ¼M,- v'kkd dkfy;k ,o lèkhj lkg½ dk mi;kx ekudhÑr midj.k d :i e fd;k x;k gA l;qä ,o ,dkdh ifjokjk d ifr&iRuh d vkilh lcèkk e vrj ik;k x;k g tcfd l;qä ,o ,dkdh ifjokjk d 'kf{kd Lrj e lkFkd vrj ugh ik;k x;k gA

eq[; 'kCn

l;qä ,o ,dkdh ifjokj] ifr&iRuh d vkilh lcèk] ,o 'kf{kd LrjA

çLrkouk

आधुनिक युग में परिवार की विचारधारा निरन्तर परिवर्तित हो रही है तथा परिवार में बालक एवं बालिकाओं को महत्व दिया जाने लगा है। परिवार में लिंग भेद सम्बन्धी दृष्टिकोण कैसा है यह पारिवारिक पृष्ठभूमि पर निर्भर करता है। पारिवारिक पृष्ठभूमि से तात्पर्य परिवार की स्थिति, परिवार का आर्थिक–सामाजिक पृष्ठभूमि, रहन–सहन का स्तर, पति–पत्नी का आपसी सम्बन्ध तथा परिवार के प्रकार से होता है। प्रत्येक परिवार की कुछ व्यक्तिगत सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक विशेषताऐं होती है जो परिवार को विशिष्ट बनाती है। प्रत्येक परिवार की अपने बालक तथा बालिका के प्रति अभिवृत्ति निर्माण में इस पृष्ठभूमि का महत्वपूर्ण योगदान है। पारिवारिक पृष्ठभूमि में निम्नलिखित तथ्यों को सम्मिलित किया गया है:

1. परिवार का प्रकार
2. पति–पत्नी के आपसी सम्बन्ध

3. परिवार का शैक्षिक स्तर

l;qä ifjokj

M, bjkor dos ds vuqlkj% संयुक्त परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो सामान्यतः एक घर में रहते हैं एक चौके में बना भोजन ग्रहण करते हैं जो समान सम्पत्ति के अधिकारी होते है तथा समान पूजा–पाठ में भाग लेते हैं और जो परस्पर एक–दूसरे से विशिष्ट नातेदारी से सम्बन्धित है, संयुक्त परिवार कहलाता है।

,dkdh ifjokj

oqy ,oa ckxsy ds vuqlkj% ''एक आदर्श परिवार में निर्मित सामाजिक मान्यता प्राप्त वैज्ञानिक संबंधों में बंधे हुए एक पुरुष और एक स्त्री तथा उनके बच्चे की एक संकलित इकाई है।''

सामान्य व्यवहार में हम लिंग से तात्पर्य स्त्री और पुरूष होने से लगाते है मनुष्यों में स्त्री तथा पुरुष आते हैं, परन्तु मनुष्य स्वयं इस संतुलन को बिगाड़कर मात्र पुरुषों का ही वर्चस्व रखना चाहता है, क्योंकि लिंगीय भेदभाव अपने चरम पर है। लिंग के निर्धारण में कोई व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से योगदान नहीं दे सकता है। इस प्रकार यह ऐच्छिक क्रिया न होकर अनैच्छिक क्रिया है।

ifr&iRuh ds vkilh lEcU/k

संयुक्त व एकाकी परिवार में निवासरत् पति एवं पत्नी के आपसी सम्बन्धों को शोध में चर के रूप में लिया गया है जिसमें पति एवं पत्नी परिवार में रहते हुए किस प्रकार से अपने सम्बन्धों को निर्वहन करते हैं।

ifjokj dk 'kSf{kd Lrj

संयुक्त व एकाकी में निवास करने वालों का शैक्षिक स्तर शोध का अन्य चर है जिसमें उनके शैक्षिक स्तर को देखा गया है। वर्तमान समय में लगभग सभी लोग शिक्षित हैं। आधुनिक समाज में परिवार यदि पूर्ण शिक्षित हो तभी समाज में उसे उच्च्व स्तर प्राप्त होता है।

'kks/k ds mís';

शोधार्थी ने अपने अध्ययन के निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखे हैं:

1. संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंधों का अध्ययन करना।
2. संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के शैक्षिक स्तर का अध्ययन करना।

ifjdYiuk,a

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाईं हैं:

1. संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंधों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
2. संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के शैक्षिक स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

'kks/k fof/k

प्रस्तुत शोध हेतु दैव निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

U;kn'kZ

शोध समस्या में उत्तरप्रदेश के जनपद जौनपुर के मुफ्तीगंज ब्लाक अन्तर्गत संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंधों एवं शैक्षिक के अध्ययन हेतु वयस्क महिला एवं पुरूष को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है। संयुक्त (181 परिवार) तथा एकाकी (119 परिवार) के 150–150 महिला पुरुष को न्यादर्श हेतु चुना गया है।

'kks/k midj.k

तथ्यों का संग्रहण करने हेतु शोधार्थी द्वारा सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी (डॉ. अशोक कालिया एवं सुधीर साहू) का उपयोग मानकीकृत उपकरण के रूप में किया गया है।

vkdM+ksa dk lkf[;dh; fo'ys"k.k

आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित परीक्षणों का प्रयोग किया गया है:

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- टी–टेस्ट
- सार्थकता स्तर

fu"d"kZ ,oa fo'ys"k.k

rkfydk Øekd 01% संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंधों के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' परीक्षण की तालिका

पारिवारिक संरचना	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश	'टी' परीक्षण का मूल्य	सार्थकता स्तर
संयुक्त (N=181)	2.06	0.32	298	10.49	p<0.0001
एकाकी (N=119)	2.61	0.51			

- 0.0001 स्तर पर सार्थक

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका क्रमांक – 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि संयुक्त परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंधों का मध्यमान 2.06 तथा एकाकी परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंधों का मध्यमान 2.61 है। इस प्रकार एकाकी परिवारों का मध्यमान संयुक्त परिवारों की तुलना में अधिक है। टी–परीक्षण का परिगणित मूल्य 298 स्वतंत्रता अंश पर 10.49 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना – ''संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंधों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता'' अस्वीकृत होती है। इस प्रकार संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंधों में अंतर पाया गया है।

rkfydk Øekd 02% संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के शैक्षिक स्तर के मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' परीक्षण की तालिका

पारिवारिक संरचना	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश	'टी' परीक्षण का मूल्य	सार्थकता स्तर
संयुक्त (N=181)	1.14	1.55	298	1.53	p>0.0001
एकाकी (N=119)	0.87	1.45			

- 0.0001 स्तर पर असार्थक

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

तालिका क्रमांक – 2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि संयुक्त परिवारों के शैक्षिक स्तर का मध्यमान 1.14 तथा एकाकी परिवारों का 0.87 है। इस प्रकार संयुक्त परिवारों का मध्यमान एकाकी परिवारों की तुलना में अधिक है। टी–परीक्षण का परिगणित मूल्य 298 स्वतंत्रता अंश पर 1.53 है जो कि 0.01 स्तर पर असार्थक है। अतः शून्य

परिकल्पना– ''संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के शैक्षिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता'' स्वीकृत होती है। अतः संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के शैक्षिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है यद्यपि संयुक्त परिवारों का शैक्षिक स्तर एकाकी परिवारों की तुलना में मामूली अधिक पाया गया है।

fu"d"kZ

संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंधों में अंतर पाया गया है जबकि संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के शैक्षिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। संयुक्त परिवार में पति पत्नी के संबंधों में अधिक सद्भाव सौम्यता एवं शांतचित्तता पायी गयी, अपेक्षाकृत एकाकी परिवारों के। एकाकी परिवार में पति–पत्नी को अपने विचारों की अभिव्यक्ति की पूर्णतः स्वतंत्रता होने के कारण आपसी संघर्ष अधिक है। एकाकी परिवार में पति–पत्नी यदि व्यवसाय अथवा नौकरी से जुड़े होते हैं तो उनके आपसी संबंध उनके पद एवं आय से भी प्रभावित होते हैं। संयुक्त परिवार में दो अथवा तीन पीढ़ियों के साथ रहने से पति–पत्नी के संबंधों में संकोच का भाव रहता है, विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कम पायी जाती है जिससे उनका आपसी संबंध अधिक समायोजन मुक्त होता है। अतः शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि संयुक्त एकाकी परिवारों के पति–पत्नी के आपसी संबंध में अन्तर पाया गया।

परिवार चाहे संयुक्त हो या एकाकी उसमें निवास करने वाले लोग समान रूप से अध्ययन करते हैं। हालांकि संयुक्त परिवार में वह सुविधायें अन्य सदस्यों की वजह से नहीं मिलती परंतु फिर भी एकाकी परिवार में निवास करने वाले कभी तो संयुक्त परिवार में रहे भले ही बाद में वे एकाकी परिवार में निवास करने लगे इसलिए संयुक्त एवं एकाकी परिवारों के शैक्षिक स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

lq>ko

- स्त्री स्वास्थ्य और शिक्षा को सतत् विकास की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है। अतः किसी व्यक्ति, समाज तथा संस्था के लिये स्त्री शिक्षा एवं स्वास्थ्य अत्यन्त आवश्यक अभिकरण है। इसी कारण यह शोध बिना किसी भेदभाव के आज सभी के लिये शिक्षा और स्वास्थ्य पर बता देने के लिये अत्यन्त आवश्यक है जिससे महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य को सुदृढ़ बनाया जा सकेगा।
- परिवार में रहने वाले महिला एवं पुरुषों को समान शिक्षा देनी चाहिए।
- पति–पत्नी के आपसी सम्बन्ध विश्वास पर टिकते हैं, अतः विश्वास दोनों के बीच कायम रहना चाहिए।
- पति और पत्नी को समझदारी से अपने संबंधों का निर्वहन करना चाहिए।

lanHkZ lwph

1. बघेल डी.एस., (2006). *''सामाजिक अनुसंधान'',* साहित्य भवन, पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटरर्स, आगरा।
2. शर्मा वीरेन्द्र सिंह, (2000) *समकालीन भारत में सामाजिक समस्या,* पंचशील प्रकाशन जयपुर।
3. गनस्लेवक, (2015) *वूमेन एण्ड ह्यूमन राइट,* ए. पी. एस. पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली।
4. सेतिया सुभाष, महिला असमानता की विविध परतें, *योजना पत्रिका,* मार्च–2012, अंक–3, नई दिल्ली।
5. राठौर सीमा एवं अग्रवाल आरती, 'मध्यप्रदेश में स्त्री–पुरुष अनुपात का भौगोलिक अध्ययन' (चम्बल सम्भाग के विशेष संदर्भ में), *साहित्य क्रांति* अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, सितम्बर–2014, अंक–3, गुना।

––==00==––